भास्वती

द्वितीयो भागः

द्वादशवर्गाय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

(केन्द्रिकपाठ्यक्रमः)

भास्वती

द्वितीयो भागः

द्वादशवर्गाय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

(*केन्द्रिकपाठ्यक्रमः*)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-637-3

प्रथम संस्करण
जनवरी 2006 माघ 1927

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 आश्विन 1929
फरवरी 2009 फाल्गुन 1930

PD 3T ML

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

रु. 35.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा तरंग प्रिन्टर्स बी-50, कृष्ण कुंज एक्सटेंशन II दिल्ली 110092 द्वारा मुद्रित।

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : *पेय्येटि राजाकुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *शिव कुमार*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *गौतम गांगुली*
सहायक संपादक : *एम. लाल*
उत्पादन सहायक : *प्रकाश वीर सिंह*

आवरण
आलोक हरि

चित्रांकन
प्रदीप नायक

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध -कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि- गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः

अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभ–त्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

कृष्णकुमारः

नवम्बर 2006 — निदेशकः

नव देहली — राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

समन्वयक

कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफेसर संस्कृत,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.।

सदस्य

जगदीश सेमवाल, *पूर्व निदेशक,* वी. वी. बी. आई. एस., एण्ड आई. एस. पंजाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर, पंजाब।

योगेश्वर दत्त शर्मा, *सेवानिवृत्त, रीडर संस्कृत,* हिन्दू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

पतञ्जलि कुमार भाटिया, *रीडर संस्कृत* विभाग पी. जी. डी. ए. वी. कालेज दिल्ली, विश्वविद्यालय।

छविकृष्ण आर्य, *उपप्रधानाचार्य,* केन्द्रीय विद्यालय, सेकेण्ड शिफ्ट, एण्ड्र्यूज गंज, नयी दिल्ली।

पी. एन. झा, *पी.जी.टी. संस्कृत,* राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली।

सरोज गुलाटी, *पी.जी.टी. संस्कृत,* कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, फेज–III, दिल्ली।

श्रेयांश द्विवेदी, *प्रवक्ता संस्कृत विभाग,* राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव

ओमप्रकाश शर्मा, *प्रवक्ता संस्कृत,* रा. व. मा. विद्यालय कुरुक्षेत्र, हरियाणा।

सरोज चमोली, *प्रधानाचार्या,* राजकीय बालिका वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बी–1 यमुना विहार, दिल्ली।

विभागीय सदस्य

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रवाचक संस्कृत,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता संस्कृत,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् श्री ईशदत्त शास्त्री, डॉ. वेदकुमारी घई एवं श्री रमाकान्त रथ की कृति 'श्री राधा' के अनुवादक श्री गोविन्द चन्द्र उद्‌गाता प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्यसामग्री सङ्कलित की गई है।

प्रकाशन कार्य में सक्रिय सहयोग के लिए भाषा विभाग कम्प्यूटर स्टेशन के *इन्चार्ज* परशराम कौशिक, *कॉपी एडीटर*-विभूति नाथ झा, सर्वेन्द्र कुमार एवं सतीश झा; *प्रूफ रीडर* राजमङ्गल यादव एवं *डी.टी.पी. ऑपरेटर* कमलेश आर्या, धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत विश्व की एक प्राचीनतम भाषा है। यह भारत की आत्मा तथा भारतीय संस्कृति का मुख्य स्रोत है। संस्कृत भाषा और उसका वाङ्मय राष्ट्र की एक ऐसी निधि है जो सनातन मूल्यों और अभिनव प्रवृत्तियों में समन्वय स्थापित करने की अद्‌भुत क्षमता से सम्पन्न है। संस्कृत भाषा में एक विशाल ग्रन्थराशि उपलब्ध होती है। इसका प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है। समस्त संस्कृत वाङ्मय को दो भागों में बाँटा जाता है–वैदिक साहित्य एवं लौकिक साहित्य। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चारों वेद ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदाङ्गसाहित्य की गणना की जाती है। इसमें आध्यात्मिक विषयों के साथ लौकिक विषयों का भी उल्लेख है।

वैदिक साहित्य के अनन्तर लौकिक साहित्य का परिगणन किया जाता है, जिसकी विभाजक सीमा के रूप में आदिकवि महर्षि वाल्मीकि हमारे समाने आते हैं। एक क्रौंची के विलाप से करुणार्द्र हुए वाल्मीकि के मुख से जो शोकमयी वाणी निःसृत हुई, उसी का लिपिबद्ध स्वरूप रामायण है। इसी आधार पर वाल्मीकि को आदिकवि तथा रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है। वाल्मीकि से ही लौकिक साहित्य का प्रारम्भ माना जाता है। वाल्मीकि के अनन्तर वेदव्यास ने महाभारत का प्रणयन कर कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य हुए महान् सैन्य संघर्ष को लिपिबद्ध कर विश्व को शान्ति का उपदेश दिया।

वाल्मीकि से लेकर वर्तमान काल तक संस्कृत साहित्य गंगा के प्रवाह की भाँति निरन्तर प्रवाहित हो रहा है, जिसे प्रमुख रूप से चार भागों में विभक्त किया जा सकता है।

महाकाव्य, गद्यकाव्य, चम्पूकाव्य एवं नाट्यसाहित्य सरल वैदर्भी रीति में उपनिबद्ध दो महाकाव्यों रघुवंश एवं कुमारसम्भव के माध्यम से कालिदास ने उत्तरवर्ती कवियों के समक्ष महाकाव्य का एक सर्वमान्य स्वरूप प्रस्तुत किया। कालक्रम के प्रभाव से अलंकारमयी शैली का प्रादुर्भाव हुआ जिसमें किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवध आदि अपेक्षाकृत कठिन काव्यों की रचना हुई। गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट, दण्डी तथा सुबन्धु ने संस्कृत गद्य को एक ऐसी ऊँचाई तक पहुँचाया कि वर्तमान काल में

भी गद्य का आदर्श वे ही माने जाते हैं। गद्य तथा पद्यमय काव्यों को चम्पूकाव्य माना गया, जिसमें नलचम्पू आदि प्रमुख हैं। नाटक, जो कि रूपक का ही एक भेद है, संस्कृत साहित्य का रमणीय अङ्ग है। कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तल को अनुवाद के माध्यम से पढ़कर पाश्चात्य जगत् ने संस्कृत को यूरोपीय भाषाओं तथा संस्कृत को सम्मान की दृष्टि से देखा तथा तुलनात्मक अध्ययन कर भाषा विज्ञान नामक एक नवीन विज्ञान की धारा का सूत्रपात किया।

प्रस्तुत संकलन में मङ्गलम् के अतिरिक्त कुल दस पाठ हैं। 'मङ्गलम्' के प्रथम मन्त्र में कल्याण की प्राप्ति हेतु दान, अहिंसा तथा परस्पर मिलकर चलने का संकल्प व्यक्त किया गया है। दूसरे मन्त्र में धनैश्वर्य की प्राप्ति हेतु सुपथ से ले चलने की प्रार्थना, तृतीय मन्त्र में मित्र, शत्रु व अनिष्ट से अभय की भावना तथा अन्तिम मन्त्र में तप और दीक्षा को राष्ट्रीय भावना एवं सामर्थ्य का मूल बताकर राष्ट्र के प्रति विनम्र रहने की कामना की गई है।

प्रथम पाठ **'अनुशासनम्'** तैत्तिरीय उपनिषद् से संगृहीत है। इसमें आचार्य, शिष्यों को नैतिक मूल्यों का उपदेश देता है। इसमें सत्य बोलने, सत्याचरण करने, स्वाध्याय और प्रवचन में प्रमाद न करने, माता-पिता, आचार्य एवं अतिथि को देवता मानकर सत्कार करने का पावन उपदेश दिया गया है। इस पाठ में दी गई शिक्षाएँ सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक हैं।

द्वितीय पाठ **'न त्वं शोचितुमर्हसि'** महाकवि अश्वघोष रचित 'बुद्धचरितम्' से संकलित है। इस पाठ में सिद्धार्थ महाभिनिष्क्रमण के लिए गृहत्याग करते हैं, सारथी छन्दक उन्हें भार्गव ऋषि के आश्रम तक पहुँचाते हैं। छन्दक को राजमहल की ओर जाने के लिए कहने से पहले वे उसकी स्वामिभक्ति की प्रशंसा करते हैं। इस पाठ में सिद्धार्थ छन्दक द्वारा राजा को सन्देश भेजते हुए कहते हैं कि वियोग तो इस संसार से निश्चित (ध्रुव) है, अपनों से वियोग भी अवश्यंभावी है अतः मेरे वनवास जाने पर वे शोक न करें।

तृतीय पाठ **'मातुराज्ञा गरीयसी'** महाकवि भास विरचित 'प्रतिमा-नाटकम्' से लिया गया है। संस्कृत के लब्धप्रतिष्ठ नाटककार भास ने कैकेयी के प्रति राम की अद्भुत निष्ठा एवं आदर की भावना प्रस्तुत की है। राम के राज्याभिषेक न होने देने में एवं राम के वनगमन में कैकेयी प्रमुख कारण होने पर भी राम कैकेयी माता की उस आज्ञा को भारतीय संस्कृति के अनुरूप हितकारिणी ही मानते हैं।

चतुर्थ पाठ **'प्रजानुरञ्जको नृपः'** महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है। पाठान्तर्गत श्लोकों में रघुकुल के राजाओं के गुणों के वर्णन के माध्यम से संसार के शासकों को संदेश देने का प्रयास किया गया है। महाकाव्य के आधार पर राजा का मुख्य धर्म प्रजा का अनुरञ्जन करना है। राजा को प्रजा के कल्याण के लिए ही प्रजा से कर लेना चाहिए, कालिदास इसके माध्यम से राजा के अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

पञ्चमपाठ **'दौवारिकस्य निष्ठा'** आधुनिक विद्वद्वरेण्य प. अम्बिकादत्त व्यास द्वारा लिखित 'शिवराजविजय' नामक संस्कृत उपन्यास से संकलित है। इस ग्रन्थ में लेखक ने शिवाजी एवं औरङ्गजेब के संघर्ष को आधार बनाया है। इस पाठ में प्रतापदुर्ग के मुख्य द्वारपाल की ईमानदारी तथा स्वामिभक्ति की महत्ता बड़ी ही अभिनयात्मक ढंग से संन्यासी वेशधारी गौरसिंह द्वारा द्वारपाल की परीक्षा लेकर प्रदर्शित की गई है।

षष्ठ पाठ **'सूक्तिसौरभम्'** में प्राचीन एवं अर्वाचीन उभयविध कवियों की चुनी हुई कुछ सूक्तियों को उपनिषद्ध किया गया है। जहाँ नीतिविदों में प्रसिद्ध चाणक्य, भर्तृहरि, विष्णुशर्मा, महाकवि विह्लण की सूक्तियों का संग्रह है वहाँ आधुनिक कवियों में भट्टरामनाथशास्त्री, मङ्गलदेवशास्त्री आदि मनीषियों की सूक्तियाँ इस पाठ में चयनित हैं।

सातवाँ पाठ **'नैकेनापि समं गता वसुमती'** कवि प्रवर बल्लालसेन रचित भोजप्रबन्ध से संकलित है। इस पाठ में 'अतिलोभो न कर्तव्यः' का पावन संदेश दिया गया है। लोभी व्यक्ति किसी भी घृणित कार्य से नहीं हिचकिचाता। इसी प्रकार के लोभ की अतिशयता से अभिभूत भोज का चाचा मुञ्ज, बालक भोज की हत्या का षडयन्त्र करता है। भोज मृत्यु से पूर्व एक सन्देश श्लोक के रूप में अपने रक्त से लिखकर भेजते हैं। श्लोक के इस भाव को समझकर मुञ्ज का मन बदल गया और वैराग्यशील होकर वन जाने को उद्यत हो गया तथा भोज को पुनर्जीवित करने का यत्न सोचने लगा। बुद्धिसागर नामक महामात्य की सहायता से भोज की प्राणरक्षा हुई।

आठवाँ पाठ **'हल्दीघाटी'** आधुनिक संस्कृत के सुकवि ईशदत्त शास्त्री द्वारा रचित 'प्रतापविजय' से संगृहीत है। यह पाठ राष्ट्र को वर्तमान व भावी पीढ़ी में राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय की पुनीत प्रेरणा प्रदान करता है। महाराणा प्रताप के पास यद्यपि मुगल सम्राट् के समान धनबल व सैन्यबल नहीं था फिर भी मुगल साम्राज्य से अपने राज्य तथा स्वाभिमान की रक्षा हेतु लोहा लेते रहे। प्रतापविजय नामक

इस खण्ड–काव्य में लेखक ने हल्दीघाटी के प्रत्येक रज:कण को प्रताप के संघर्ष का साक्षी माना है। यह पाठ युवकों के लिए विशेष प्रेरणा का स्रोत है।

नवम पाठ **'मदालसा'** नूतन रचना कर्त्री पूर्ण आचार्या जम्मू विश्वविद्यालय श्रीमती वेदकुमारी घई द्वारा लिखित 'पुरन्ध्रीपञ्चकम्' नामक रूपक संग्रह से संकलित है। आधुनिक नाट्य रचनाओं में पुरन्ध्रीपञ्चकम् लब्धख्याति रूपक संग्रह है। प्रस्तुत पाठ में राजकुमार ऋतुध्वज तथा मदालसा के संवाद के माध्यम से लेखिका ने राजकुमारी मदालसा के स्वाभिमान एवं नारी अस्मिता का एक नए परिप्रेक्ष्य में वर्णन किया है।

दशम पाठ **'प्रतीक्षा'** उडिया साहित्य के मूर्धन्य लेखक श्री रमाकान्तरथ के उडिया काव्य का अनुवाद संस्कृत भाषा में 'श्रीराधा' नाम से प्रकाशित है। इसके अनुवादक श्री गोविन्दचन्द्र उद्गाता हैं। उसी का एकांश प्रतीक्षा नाम से प्रकाशित है। यह पद्य रहस्यवादी धारा का संस्कृत में प्रतिनिधित्व करता है। इसमें राधा एवं कृष्ण का सख्यभाव प्रदर्शित है। राधा कृष्ण की प्रतीक्षा में अत्यन्त व्याकुल हो जाती है। व्याकुलता में उसकी मनोदशा बड़ी अद्भुत हो जाती है। वह विभिन्न रूपों में कृष्ण की छवि को देखती है। कृष्ण की यह छवि अनिर्वचनीय है। उनके सकल रूप का वर्णन असम्भव है। कण–कण में विद्यमान वह उपास्य भक्त को अनेक रूपों में दिखाई देता है। एक प्रकार से यह गीत प्रतीकात्मक व रहस्यात्मक है।

यद्यपि इस संकलन को यथासंभव छात्रोपयोगी एवं स्तर के अनुरूप बनाने का प्रयास किया गया है। तथापि इसे छात्रों के लिए और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

शिक्षकों से निवेदन

शिक्षकों से निवेदन है कि वह पाठों को पढ़ाते समय अधोबिन्दुओं पर ध्यान दें।

'अनुशासनम्' पाठ का अध्यापन करते समय पाठ के अतिरिक्त नैतिक मूल्यों का परिचय भी दें तथा पाठान्तर्गत शिक्षाओं की सार्वभौमिकता एवं सार्वकालिकता के सम्बन्ध में बताएँ तथा उपनिषद् साहित्य का संक्षिप्त परिचय दें।

बुद्धचरित के आधार पर महात्मा बुद्ध के संदेश एवं महाकवि अश्वघोष का साहित्यिक परिचय दें।

महाकवि भास की नाट्यरचनाओं का परिचय तथा राम के आदर्शों का एवं नैतिक मूल्यों से छात्रों को परिचित करवाएँ। शिक्षक छात्रों को अभिनय कला के प्रति प्रेरित करें।

प्रजानुरञ्जको नृपः के आधार पर महाकवि कालिदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का दर्शन कराएँ एवं प्रजानुरञ्जन ही राजा का मुख्य धर्म है राम के इस आदर्श को बालकों के मानस में संविष्ट करें।

दौवारिकस्य निष्ठा पाठ के माध्यम से कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा, ईमानदारी एवं स्वामिभक्ति जैसे मूल्यों का प्रतिपादन तथा संस्कृत के कथा साहित्य का परिचय देकर आधुनिक लेखक अम्बिकादत्त व्यास के कृतित्व से परिचित करवाएँ। उनके सम्पूर्ण शिवराज विजय को मूल (तथा हिन्दी अनुवाद) पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

सूक्तिसौरभम् की प्राचीन एवं अर्वाचीन सूक्तियों के माध्यम से छात्रों के अन्तःकरण में नीति-निर्देशक तत्त्वों का अंकुर प्रस्फुटित करें।

नैकेनापि समं गता वसुमती पाठ के आधार पर भौतिक उपलब्धि को जीवन का सर्वस्व न मानें इस मूल्य से छात्रों को प्रेरित करें तथा कवि प्रवर बल्लालसेन के साहित्य का परिचय भी दें।

हल्दीघाटी पाठ में महाराणा प्रताप के शौर्य के माध्यम से विपरीत परिस्थितियों के बावजूद लक्ष्य के प्रति अपराजय भाव से अडिग रहने की प्रेरणा दें।

मदालसा पाठ के आधार पर नारी के स्वाभिमान एवं नारी के गौरव का सन्देश छात्रों के अन्तःकरण संनिविष्ट करें।

प्रतीक्षा पाठ के माध्यम से संस्कृत वाङ्मय में अनूदित साहित्य का सामान्य परिचय दें।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

विषयानुक्रमणिका

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।